संपादक का नोट

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अतुलनीय नाम में आप सभी को नमस्कार! प्रभु हर समय अच्छा है! मैं अपने प्रभु को धन्यवाद करती हूँ कि यह केवल उनकी अनुग्रह और दया से है, कि हम 14 वें वर्ष में आगे बढ़ेंगे क्योंकि रोज ऑफ शेरोन चर्च 14 जुलाई, 2017 को अपनी सालगिरह मनाएगा। इन 14 सालों में मैंकई बुरे अनुभवों और बहुत अच्छे अनुभवों से गुजर चुकी हूँ, परन्तु मैं अपने सभी बुरे दिनों को भूल गई हूँ और मेरे प्रभु ने उन सभी अच्छे कामों के लिए प्रभु का धन्यवाद करती हूँ जो उन्होंने मेरे लिए किया है, जिसके कारण मेरे प्रभु ने मुझे बहुत अधिक आशीर्वाद दिया है। जब स्तिुफनुस प्रभु के वचनों का प्रचार कर रहा था, तो यहूदी क्रोदित होकर दांत पीसने लगे। उनके चेहरे नफरत से भरे हुए थे लेकिन स्तिुफनुस की आँखें उन लोगों पर नहीं थीं जो उसपर पथराव के लिए तैयार थे, वह स्थिति के बारे में चिंतित नहीं था। उसने अपनी आँखें आसमान की ओर उठाकर उत्तर की उम्मीद की। इस उम्मीद ने उसे स्वर्ग का एक दर्शन दिखलाया। उसने 3 दृष्टि देखीं :

1) उसने आकाश को खुला हुआ पाया

2) उसने प्रभु की महिमा को देखा

3) उसने यीशु को परमेश्वर के दायीं ओर खड़े देखा।

क्या सुंदर दृश्य था !

यह एकमात्र जगह है जहाँ हम यीशु को खड़े देखते हैं। अन्य जगहों पर बाइबल दिखता है कि यीशु परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठे हैं। इब्रानियों 1 : 3 ''वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है; वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन

के दाहिने जा बैठा।'' मरकुस 16 : 19 ''निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।'' जब स्तिुफनुस शहीद हो रहा था, यीशु बैठ नहीं सका, वह कूदे और उठ खड़े हुए। जब परमेश्वर का बेटा स्वर्ग में खड़े हुए तो सभी मेजबानी खड़े हो गए, स्वर्गदूत, करुब देवताओं, उच्च कोटि के देवदूत, चार प्राणी और 24 याजक, स्तिुफनुस का स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। जब स्तिुफनुस अपनी आत्मा लेने के लिए प्रभु से प्रार्थना कर रहा था, तो यहूदी उसे मारने के लिए पत्थर उठा रहे थे।मेरे प्यारे बच्चों क्या तुम भी अपने जीवन में ऐसी ही स्थिति का सामना कर रहे हों ? बुरे लोग और बुरे बन रहे हैं और तुम्हारे खिलाफ शत्रु के रूप में खड़े हैं? अपनी आँखों को ऊपर उठाओ और प्रभु की ओर देखो जिसने क्रूस ले लिया और तुम्हारी माँ के गर्भ में बनने से पहले ही तुम्हारे लिए मर गया। जब आप अपनी आँखें प्रभु की ओर उठाते हैं, तो वह आपके शत्रुओं के सामने मेज तैयार करेगा और आपके सिर को तेल के साथ अभिषेक करेगा और आपका पात्र उमड़ पड़ेगा। आप भयानक समुद्र और तरंगों को नहीं देख पाएंगे जो कि पतरस ने देखा था। आप लोगों को अपने दांतों को पिस्ते हुए और पत्थरों की तरह उनके शब्दों को फेकतें हुए नहीं देखेंगे। आपकी आँखें सिर्फ प्रभु की ओर देखना चाहिए जो आपसे प्यार करता है। यदि आप कुछ चीजों में विश्वासयोग्य हैं, तो प्रभु आपका आदर करेंगे। मत्ती 25 : 21 ''उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।'' यशायाह 49 : 18 ''अपनी आंखें उठा कर चारों ओर देख, वे सब के सब इकट्ठे हो कर तेरे पास आ रहे हैं। यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन सभों को गहने के समान पहिल लेगी, तू दुल्हिन की नाईं अपने शरीर में उन सब को बान्ध लेगी।''सांसारिक लोग अपने आसपास के सभी शत्रुओं को देखेंगे। लेकिन हम परमेश्वर की कृपा और महिमा को देखेंगे। भजन संहिता 34 : 7 ''यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उन को बचाता है।''

आपकी आंखें हमेशा प्रभु की ओर हों, वह तुम्हारे सारे मन की इच्छा पूरी करेगा।

प्रभु आप सब को आशीर्वाद दें। हम फिर से मिलें तब तक।

पास्टर सरोजा म.

प्रभु के साथ समय व्यतीत करो, आशीर्वाद प्राप्त करो !

1 इतिहास 13 : 14 ''और परमेश्वर का सन्दूक ओबेद–एदोमके यहां उसके घराने के पास तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने ओबेद–एदोमके घराने पर और जो कुछ उसका था उस पर भी आशीष दी।'' हम देखते हैं कि ओबेद–एदोम ने अपने घर में प्रभु के सन्दूक को बड़े प्यार से स्वीकार किया, इस प्रकार प्रभु ने ओबेद–एदोम के घर और परिवार को आशीर्वाद दिया। हम मुख्य पुरोहित एली के समय में देखते हैं, पलिश्तियों ने हमेशा इस्राएलियों के साथ युद्ध का सामना किया था। यह एक ऐसा युद्ध के दौरान था जब पलिश्ती इस्राएल से परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा कर लिया था। उस समय जब सन्दूक पर कब्जा कर लिया था और पलिश्तियों द्वारा ले लिया गया था, हम देखते हैं कि क्या हुआ था। 1 शमूएल 4 : 22 ''फिर उसने कहा, इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।''पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक को लिया और अन्य मूर्तियों के साथ अपने मंदिर में रख दिया। उनके मंदिरों में दीवारों पर सभी चारों तरफ विशाल मूर्तियां और अन्य देवताओं की मूर्तियां थीं और इस मंदिर में परमेश्वर के सन्दूक को रखा गया था। आइए देखें कि उस रात क्या हुआ, जब प्रभु के सन्दूक को अन्य मूर्तियों के साथ मंदिर में रखा गया था, अन्य सभी देवता की मूर्तियां दीवार और अन्य जगहों से गिर गईं, प्रभु के सन्दूक को झुककर उनके चेहरे पर गिर गई। पलिश्ति इस बारे में हैरान और आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने तुरंत सभी मूर्तियों को अपने मूल स्थान पर एक बार फिर से रख दिया। लेकिन फिर से अगले दिन, मूर्तियों को फेंक दिया गया था, उनके हाथों और पैरों और सिर टूटे हुए थे और मूर्तियों को मंदिर के द्वार पर फेंक दिया गया था। परमेश्वर के सन्दूक और मूर्तियों के बीच मंदिर में युद्ध हुआ होगा। मूर्तियों को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया था। जब पलिश्तियों ने अगले दिन मंदिर में आए , तो उन्होंने एक बार फिर देखा कि क्या हुआ था, लेकिन इस बार वे प्रभु के सन्दूक से डर गए थे। उन्होंने तत्काल इजराइलियों को बुलाया और उन्हें प्रभु का सन्दूक लौटा दिया। पवित्र शास्त्रों में पढ़ते हैं कि अगले दिन क्या हुआ? 1 शमूएल 5 : 4 ''फिर बिहान को जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनों हथेलियां डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं; निदान दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया।''पहिले दिन पलिश्तियों ने देखा कि मन्दिर में सभी मूर्तियां जो दीवार पर थी और लटक रही थीं, उनके चेहरे भूमि

पर गिर गईं, और परमेश्वर के सन्दूक के सामने झुककर गिर गई। उन्होंने सभी मूर्तियों को फिर से स्थान पर बैठा दिया। परन्तु, अगले दिन पलिश्तियों ने देखा कि उनकी मूर्तियों को पूरी तरह टुकड़ों में नष्ट कर दिया गया था। 1 शमूएल 5 : 6 ''तब यहोवा का हाथ अशदोदियों के ऊपर भारी पड़ा, और वह उन्हें नाश करने लगा; और उसने अशदोद और उसके आस पास के लोगों के गिलटियां निकालीं।'' पलिश्तियों को एहसास हुआ कि प्रभु का हाथ उन पर गिर गया, प्रभु ने उन्हें बवासीर के रोगों के साथ दण्ड किया, वे न बैठ सकते थे और न खड़े हो पाते थे, उनके गुदा से खून बह रहा था। इस प्रकार हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सजा पलिश्तियों पर आ गई। पलिश्तियों को इस बात का एहसास हुआ, तुरंत वे प्रभु के सन्दूक को इजराइलियों के पास लौटा दिया। उस समय, इस धर्मी पुरुष ओबेद–एदोम ने अपने घर में परमेश्वर के सन्दूक को ग्रहण किया था। इस प्रकार, उनके घर को परमेश्वर से पराक्रमी आशीष प्राप्त हुई।परमेश्वर के सन्दूक में क्या था, इसमें मन्ना का एक सुनहरा पात्र था, दस आज्ञाओं के पटिया और हारून की छड़ी थी। इब्रानियों 9 : 4 ''उस में सोने की धूपदानी, और चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक और इस में मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिस में फूल फल आ गए थे और वाचा की पटियां थीं।'' आज भी अगर हम परमेश्वर के सन्दूक को स्वीकार करते हैं, तो हम धन्य होंगे, लेकिन अगर हम इसे मना करेंगे तो हम प्रभु के आशीर्वाद को खो देंगे। वैसे ही जैसे इजरायलियों ने अपने आशीर्वाद को खो दिया था, जब परमेश्वर के सन्दूक उनसे लूट लिया गया था। जब परमेश्वर का सन्दूक इस्राएल में लौट आया, तो आशीर्वाद भी उनके पास लौट आया। हमें आज भी परमेश्वर के हर वचन को स्वीकार करना चाहिए, जब हम वचन को स्वीकार करेंगे, हम अपने जीवन में आशीषित होंगे। भजन 73 : 23 ''तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही था; तू ने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा।'' प्रभु हमारे दाहिने हाथ पकड़ेंगे और हमें नेतृत्व करेंगे और हमें हमेशा मार्गदर्शन करेंगे। हम अपनी शांति और प्रभु के प्यार को कभी नहीं खोएंगे। प्रभु हमारे साथ नहीं है, जब वह हमारे दाहिने हाथ को पकड़ नहीं लेता है और हमारा नेतृत्व करता है। इस प्रकार हम इस दुनिया के राजा के नेतृत्व में हैं और हमारा जीवन बर्बाद होगा। वह हमारे जीवन को अंधेरे में ले जाएगा और आखिरकार नरक में जलाएगा। लेकिन जब हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और उनके रास्ते पर चलते हैं, तो उसका दाहिना हाथ हमेशा हमें पकड़ेगा और हमें मार्गदर्शन करेगा।जिन लोगों ने परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया है, वे कभी उनकी तरफ को नहीं छोड़ना

चाहते। पवित्र शास्त्रों में हम उस व्यक्ति के बारे में जानते हैं जिसे शत्रु का आत्मा पकड़ा था और यीशु द्वारा ठीक किया गया था। उसने यीशु को क्या कहा था? लूका 8 : 38 ''जिस मनुष्य से दुष्टात्माऐं निकली थीं वह उस से बिनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा।'' शत्रु का आत्मा पकड़ा हुआ मनुष्य को अब छुटकारा मिला और स्वतंत्र किया है, उसने परमेश्वर के पराक्रमी शक्ति और प्रेम का अनुभव किया है, इस प्रकार वह यीशु को बताता है कि वह उसके साथ रहना चाहता है। जिन लोगों ने परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया है, वे हमेशा उसके साथ बनके रहना चाहते हैं। इस दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं, जिन्होंने परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया है और उसके साथ रहना चाहते हैं, जबकि अन्य जिन्होंने प्रभु का प्यार देखा है और अभी भी उस पर विश्वास नहीं करते हैं। शास्त्रों में, हम जानते हैं कि हालांकि लोगों ने यीशु के पराक्रमी शक्ति और प्रेम को देखा था, फिर भी यीशु को अपने देश छोड़ने और डर के कारण जाने के लिए कहा।इस प्रकार हम में से जो परमेश्वर के सन्दूक के साथ जीवन जीते हैं, उनके वचन को स्वीकार करते हैं, उनके दिल में शांति होगी और उनके जीवन में प्रेम होगा। आज, हम इस संसार में देखते हैं कि शांति नहीं है, इस दुनिया में शांति प्राप्त करना मुश्किल है, हर समय परिवार में; परिवार के बाहर, इस दुनिया में झगड़े हैं। परन्तु जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं, परमेश्वर ने हमें उनकी शांति दी है कि यह दुनिया नहीं दे सकती है और दुनिया इसे ले भी नहीं सकती। शास्त्रों में हम एक नबी के एक कहानी को जानते हैं जो अपने परिवार के लिए केवल कर्ज और दुख छोड़ देता है। उसकी पत्नी ने नबी एलीशा को रोते हुए कहा कि ''मेरे पति ने हमें कर्ज के साथ छोड़ दिया है, अब जब की वह मर चुका है, देनदार मेरे बेटों को बंधन में ले जाने के लिए आए हैं''। नबी ने अपने परिवार को ऋण के साथ छोड़ दिया है, परन्तु हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमारे लिए शांति दी है, जो उस पर विश्वास करते हैं। यूहन्ना 14 : 27 ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देताः तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।'' हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमें इस दुनिया में शांति दी है, और दर्द, दुख, शर्म नहीं दिया है। नबी के विपरीत जो अपने परिवार के लिए शर्म, दर्द और दुख छोड़ के गया। शाऊल इजराइल का एक महान राजा था, लेकिन वह अपने देशवासियों के लिए क्या पीछे छोड़ गया, केवल युद्ध और झगड़े। हम जानते हैं कि उसके जीवन का अंत बहुत दुखत था, युद्ध में उसके सातों बेटों की मृत्यु हो गई। परन्तु हमारे प्रभु परमेशर ने हमारे लिए सभी समझ से परे

केवल शांति छोड़ दी है। शांति जो कोई नहीं खरीद सकता है, न ही इस दुनिया में कोई भी हमें दे सकता है। इस प्रकार जब हम प्रभु परमेश्वर के साथ एक बन जाते हैं हमारा जीवन एक महान आशीर्वाद हो जाता है, लेकिन अगर प्रभु की कृपा हमें छोड़ देती है, हम सभी शांति को खो देंगे।दुनिया हमें क्या दे सकती है? कुछ भी तो नहीं ? आज हमारे पास माता–पिता हैं, कल हमारे पास न हो। इस प्रकार हमें किस पर निर्भर रहना चाहिए? हमें केवल हमारे प्रभु पर ही निर्भर होना चाहिए, हमें उसे कभी भी त्याग नहीं करना चाहिए। जब प्रभु हमारे साथ नहीं हैं, तो हम अपने जीवन में हर चीज को खो देते हैं। इसलिए, प्रभु का सन्दूक हमारे जीवन में ही रहना चाहिए, तभी हम प्रभु द्वारा आशीषित होंगे। जिस समय हम परमेश्वर के सन्दूक को खो देते हैं, हम जीवन में सब कुछ खो देंगे। हमने पहले से ही शास्त्रों में पढ़ा है, जब परमेश्वर के सन्दूक को मंदिर में रखा गया था, तो सभी मूर्तियां मुँह के बल पृथ्वी पर गिर गई थीं जो की झुक कर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने पड़ी थी। हां, मनुष्य और मानव निर्मित चीजों के द्वारा बनाई गई चीजें परमेश्वर के सामने धूल हो जाती हैं। याद है, हफ्ते के तीसरे दिन, गलील के काना में यीशु मसीह एक शादी में शामिल हुए थे। यूहन्ना 2 : 1 ''फिर उस से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्रा के ऊपर उतरते देखोगे।'' तीसरा दिन क्या दर्शाता है? काना के विवाह में यीशु ने महान चमत्कार को देखकर, उस देश के लोगों ने उसे जाने के लिए कहा। लेकिन याद रखिए कि दुष्ट आत्मा पकड़ा हुआ मनुष्य, जब उसने परमेश्वर की पराक्रमी शक्ति का अनुभव किया और वह चंगा हो गया, तो वह यीशु को छोड़ना ही नहीं चाहता था, बल्कि वह हमेशा के लिए उसके साथ रहना चाहता था। भजन संहिता 34 : 8 ''परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरूष जो उसकी शरण लेता है।'' हमारा परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर है, हमें चक के देखना चाहिए कि प्रभु अच्छा है। जो लोग उसे चख चुके हैं वे हमेशा उसके साथ रहेंगे। उसके माध्यम से हम धन्य हैं, यह उसके माध्यम से है कि हम अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं, केवल उसी के माध्यम से ही हम हमेशा ही धन्य हैं। हम यह भी जानते हैं कि यीशु के चेले पतरस और यूहन्ना अशिक्षित थे, लेकिन यीशु के साथ होने पर वे बलवंत हो गए और शिक्षित पुरुष बन गए। प्रेरितों के काम 4 : 13 ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, ओर यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।'' यीशु के

साथ बनके होने के नाते, हम उसकी कृपा, उनकी ताकत और उनके ज्ञान के साथ धन्य हैं। यह दुनिया हमें वह साहस और बुद्धि को नहीं दे सकती है। इस प्रकार परमेश्वर के साथ होने के नाते, हम इस दुनिया में बुद्धिमान, दृढ़ और निडर हो सकते हैं। जब प्रभु की कृपा का हाथ हम पर है, तो हम धन्य होंगे। हमें अपने जीवन में आशीर्वाद पाने के लिए प्रभु के साथ समय बिताना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 17 : 14 ''ये मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है: और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, ओर विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय पाएंगे।'' जो लोग प्रभु के साथ हैं, उन्हें चुना और विश्वासयोग्य कहा जाता है।जब हम प्रभु के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं, तो हम उसके चुने हुए बच्चे होंगे। हमें इस दुनिया को हमारे प्रभु से ज्यादा प्यार नहीं करना चाहिए, हमें इस दुनिया के साथ अधिक समय नहीं बिताना चाहिए, बल्कि प्रभु की उपस्थिति में समय बिताएं। यह हमारे जीवन में आशीर्वाद लाएगा। प्रभु के चुने हुए बच्चे होने के लिए, हमें प्रभु के साथ अधिक से अधिक समय बिताना चाहिए। यदि हम प्रभु पर विश्वास करते हैं, तो हम प्रभु पर भरोसा करेंगे।आज भी हम में से कई मूर्ख हैं, हम अपनी अपनी बुद्धि से हमारी समस्याओं को हल करने की कोशिश करते हैं और इस प्रकार हम प्रभु की कृपा खो देते हैं। मुख्य पुरोहित एली के परिवार की तरह, हम प्रभु की कृपा खो देंगे। याद रखें, हमारे लिए प्रभु का प्यार और उसकी शांति वह इस पृथ्वी पर पीछे छोड़ गया है। कोई भी व्यक्ति हमें शांति नहीं दे सकता है, कोई भी व्यक्ति इसे ले नहीं सकता है। हमें हमेशा प्रभु की शांति प्राप्त करने का लक्ष्य रखना चाहिए, उसने हमें अपने पापों से बचाया और इस दुनिया से नहीं। इस प्रकार हमें अपने दाहिने हाथ को उसके हाथ में दे देना चाहिए, कोई भी हमारी आस्था के बारे में हमें नहीं हिला सकता है। हमारे ज्ञान से हम कुछ नहीं कर सकते है। हमें हमेशा अपने जीवन में प्रभु को प्रथम स्थान देना चाहिए। अगर हम अपने ज्ञान से सब कुछ करने का फैसला करते हैं, तो सब कुछ बेकार होगा। जो प्रभु के लिए संघर्ष करते हैं और उनके साथ एकता में रहते हैं, वे हमेशा जीत प्राप्त करेंगे और धन्य होंगे।हम कभी भी जीवन में कुछ भी वंचित नहीं होंगे। शत्रु एक प्रशंसक शेर है, वह हमेशा हमें खाए जाने के तरीकों पर ध्यान देगा। इस प्रकार, हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए, हमारे मन में स्पष्टता के साथ और हमें तट पर प्रभु पर होना चाहिए। 1 पतरस 5 : 8 ''सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।'' इस प्रकार, हमें बुद्धिमान और बिना

भ्रम के और हमेशा प्रभु पर सतर्क रहना चाहिए। हमें हमेशा प्रभु परमेश्वर को हमारे नेतृत्व करने और हमारे मार्गदर्शन करने के लिए हमारा चरवाह होने देना चाहिए। भजन संहिता 23 : 1– 6 ''1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। 2 वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; 3 वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गो में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है। 4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है। 5 तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिएमेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है। 6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।'' एक बार जब हम प्रभु के साथ हमारे विश्वास में जितते हैं, तो हमारा घर सिय्योन में बनाया जाएगा। हम विश्वास के बिना परमेश्वर के राज्य तक नहीं पहुंच पाएंगे। हमारा विश्वास मजबूत और प्रभु के साथ हमेशा जुड़ा हुआ होना चाहिए। हमें बुद्धिमान और जागरूक होना चाहिए। याद रखें, जब यीशु दूसरी तरफ जाने के लिए समुद्र से यात्रा कर रहे थे, एक आदमी को ठीक करने के लिए, जो राक्षसों की सेना द्वारा बंधन में था। शत्रु को पहले से पता था कि यीशु उसे नाश करने के लिए आ रहा है, इस तरह उसने समुद्र में तूफान भेजा। तूफानी समुद्र ने हर किसी के दिल में डर लाया, चेले भी ''यीशु ... यीशु'' चिल्लाना शुरू करते हैं। हमारे जीवन में भी, जब परिवार में तूफान आते हैं, तो हमें अपने प्रभु परमेश्वर से चिल्लाना चाहिए, वह अकेले ही हमें हर तूफान से बचा सकता है। इस पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति नहीं है और न ही हमारा ज्ञान हमें उद्धार कर सकता है। यह केवल यीशु मसीह है जो हमारे जीवन में हर तूफान को नियंत्रित कर सकता है। लूका 8 : 24 – 25 ''24 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहाय हे स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैंरू तब उस ने उठकर आन्धी को और पानी की लहरों को डांटा और वे थम गए, और शान्ति छा गई। 25 और उस ने उन से कहा; तुम्हारा विश्वास कहां था? पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, यह कौन है जो आन्धी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उस की मानते हैं।'' शत्रु जानता है कि यीशु क्या काम करने जा रहा है, इस प्रकार जहाज को डूबाने के लिए समुद्र में तूफान भेजता है।इसी तरह, शत्रु जानता है कि हम किस काम के लिए जा रहे हैं और हमारे काम में बाधा लाता हैं। हमें दो सोच या दिमाग के नहीं होना चाहिए, हमें प्रभु में बने रहना चाहिए। याकूब 1 :

6–8 ''6 पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। 7 ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। 8 वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है।'' जो दोहरे दिमाग वाले हैं वे अपने सभी तरीकों से अस्थिर हैं। याद रखें कि हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी महान शांति छोड़ दी है। हम इस दुनिया में दोहरे दिमाग से अपनी शान्ति क्यों खोएं। इस प्रकार जब प्रभु हमारा चरवाहा है, हम एक अनुग्रह और फलदायी जीवन का नेतृत्व कर सकते हैं। हम एक अटूट जीवन जी सकते हैं। हमें एक 'दुष्ट' जीवन क्यों जीना चाहिए? हमें इसकी जरूरत नहीं है। हमारे घरों और जीवन में जो भी परिस्थिति हो, अगर हमारा विश्वास परमेश्वर में है, तो वह हमारे दाहिने हाथ से हमें पकड़ लेगा और हमें नेतृत्व करेगा और हमें मार्गदर्शन करेगा। हमें अपने जीवन में किसी भी प्रतिकूल स्थिति से डरना नहीं चाहिए, बल्कि हमें अपने परमेश्वर के हाथ में हर बुरी योजना को प्रस्तुत करना चाहिए। वह हमारे सभी प्रयासों में हमें जीत दिलाएगा भजन संहिता 42 : 11 ''हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा।'' हम सभी को परमेश्वर के हाथ में अपने हर एक भ्रम कोदे देना चाहिए।तीसरा दिन क्या दर्शाता है? तीसरे दिन प्रभु ने पेड़ों और पौधों को बनाया और खुश थे और दो बार कहा ''यह अच्छा था''। इस प्रकार दोनों पक्षों के लिए दुल्हन और दूल्हे के पक्ष ''यह एक अच्छा दिन है'' इसलिए काना की शादी सप्ताह के तीसरे दिन थी। उत्पत्ति 1 : 10 – 12 ''10 और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा; तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहाः और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। 11 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीज वाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्ही में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें; और वैसा ही हो गया। 12 तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्ही में होते हैं उगे; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।''

ये शक्तिशाली रहस्योद्घाटन हैं जो हमें नहीं भूलना चाहिए। जब प्रभु ने कहा कि ''यह अच्छा है'' दो बार, इसका मतलब यह दोनों परिवारों के लिए अच्छा है – दुल्हन और दूल्हा। इसलिए कि दोनों परिवार खुश हैं। इस प्रकार हमें अपने घरों

में परमेश्वर के सन्दूक को रखना चाहिए, वचन के अनुसार चलना और परमेश्वर पर विश्वास भी करना है। हमारे लिए यह याद रखना जरूरी है कि प्यार, शांति और आनन्द प्रभु हमें देता है किइस दुनिया का कोई भी व्यक्ति नहीं दे सकता है।

यह संदेश जो पढ़ते है उस हर एक को आशीर्वाद मिले ! प्रभु की स्तुति हो !

यहोवा की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा म.